Publication	Hindustan
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No.	01
Date	18th September 2016

हिन्दुस्तान

शनिवार को मातू राम आर्ट्स सेंटर, सुशांत स्कूल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर में मूर्ति बनाने की आधुनिक कला से छात्राएं रूबरू हुईं। । ● हिन्दुस्तान

Publication	Navbharat Times
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No.	02
Date	18th September 2016

NBT
नवभारत टाइम्स

छात्रों ने सीखी मूर्ति बनाने की कला

■प्रस, गुड़गांव : अंसल यूनिवर्सिटी के तहत चल रहे सुशांत स्कूल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर के छात्रों ने शनिवार को मानेसर स्थित मातू राम आर्ट्स सेंटर का दौरा किया। इस दौरान छात्रों ने मूर्ति बनाने की कला को करीब से देखा और अपनी जिज्ञासाओं को शांत किया।

सेंटर निदेशक नरेश कुमार ने छात्रों को मूर्ति कला के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया। उनके अनुसार, वे धातु, पीओपी, पत्थर, थर्माकोल आदि का प्रयोग कर जीवंत मूर्तियां बनाते हैं। यहां के कलाकार विभिन्न जगहों पर जाकर कई सौ फीट तक की मूर्तियां तैयार करते हैं। थ्री डी, जेब्रा ब्रश व अन्य आधुनिक सॉफ्टवेयर के माध्यम से मूर्तियों का प्रारूप बनाकर, पर्यावरण अनुकूल परिक्षण करने के उपरांत इन मूर्तियों को बनाने की प्रक्रिया आगे बढ़ती है। छात्रा काव्या ने कहा कि उसे मूर्तियों में बहुत रुचि है।

PR PROFESSIONALS
Race for Excellence

Publication	Dainik Bhaskar
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No.	01
Date	18th September 2016

दैनिक भास्कर

छात्राओं ने जाना कैसे दें निराकार को आकार...

गुड़गांव | स्कूल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर के 90 स्टूडेंट्स शनिवार को मानेसर स्थित मातूराम आर्ट सेंटर पहुंचकर मूर्ति कला की बारीकियों से रूबरू हुए। इस दौरान स्टूडेंट्स ने सेंटर के निदेशक नरेश कुमार से मूर्तियां बनाने की कला और इसमें इस्तेमाल होने वाली सामग्री के बारे में जानकारी ली। गौरतलब है कि नरेश कुमार ने दिल्ली एनसीआर के अलावा देश के अलग-अलग हिस्सों में बड़ी-बड़ी मूर्तियां बनाकर अपनी कला का प्रदर्शन किया है। नरेश कुमार ने बताया कि स्कूल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर अंसल यूनिवर्सिटी का ही हिस्सा है। यहां आकर स्टूडेंट्स ने मूर्ति कला के विभिन्न पहलुओं को जाना, उन्होंने इसकी तकनीक को समझा। कार्यशाला में उन्हें बताया गया कि मूर्ति बनाने के लिए लकड़ी, स्टेरोफोम के अलावा क्ले भी मॉडल बनाने का एक माध्यम है। इस सेंटर में धातु, पीओपी, पत्थर, थर्माकोल इत्यादि की मूर्तियां बनाई जाती हैं।

Publication	Punjab kesari
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No.	02
Date	18th September 2016

पंजाब केसरी

विद्यार्थियों ने सीखी मूर्ति बनाने की कला

आर्ट्स सेंटर में कार्यशाला के दौरान मूर्ति बनाने का प्रयास करती छात्राएं।

मातू राम आर्ट्स सेंटर में कलाकृतियां बनाने के बारे में जानकारी दी

गुड़गांव, 17 सितम्बर (प्रवीन) : जिला के मानेसर स्थित मातू राम आर्ट्स सेंटर में शनिवार को छात्र-छात्राओं ने मूर्तियां व अन्य कलाकृतियां बनाने के बारे में तकनीकि जानकारी ली।

सेंटर में धातु, पीओपी, पत्थर व थर्माकोल आदि की मूर्तियां बनाई जाती हैं और थ्रीडी, जेब्रा ब्रश एवं अन्य आधुनिक सॉफ्टवेयर के माध्यम से मूर्तियों का प्रारूप बनाकर, पर्यावरण अनुकूल परीक्षण करने के उपरांत इन मूर्तियों को बनाने की प्रक्रिया आगे बढ़ती है। सुशांत स्कूल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर के लगभग 90 छात्र-छात्रा सेंटर में मूर्तियों और उनको बनाने की तकनीक के बारे में जानकारी लेने के लिए आए। सेंटर के निदेशक नरेश कुमार ने कहा कि यहां आकर इन बच्चों ने मूर्ति कला की विभिन्न पहलुओं को जाना एवं इसकी तकनीक को समझा।

इस कार्यशाला में उन्हें बताया गया कि लकड़ी और स्टेरोफोन के अलावा क्ले भी मॉडल बनाने का एक माध्यम हो सकता है।

सुशांत स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड आर्किटेक्चर की छात्रा काव्या ने बताया कि 'मुझे मूर्तियों में बहुत रूचि है, आज मैंने सही तकनीक और कला के माध्यम से इतनी जीवंत मुर्तियां देखी और यह जाना की ये कैसे बनती हैं। मैं अपने सेमेस्टर के उपरांत यहां इंटर्नशिप करने आऊंगी।'

Publication	Amar Ujala
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No.	08
Date	18th September 2016

अमर उजाला

मूर्ति बनाने की कला समझी

मूर्ति कला से रुबरु होतीं छात्राएं।

गुड़गांव (ब्यूरो)। मातू राम आर्ट्स सेंटर मानेसर में शनिवार को सुशांत स्कूल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर के छात्र मूर्ति कला से रूबरू होने पहुंचे थे।

इस मौके पर सेंटर निदेशक नरेश कुमार ने कहा कि मूर्ति कला के विभिन्न पहलुओं को समझने में विद्यार्थियों ने काफी दिलचस्पी दिखाई। इस सेंटर में धातु, पीओपी पत्थर, थर्माकोल आदि से मूर्तियां तैयार की जाती हैं।

Publication	National Duniya
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No.	06
Date	18th September 2016

नेशनल दुनिया

मूर्ति बनाने की आधुनिक कला से रूबरू हुए छात्र

नेशनल दुनिया

गुड़गांव। मातू राम आर्टस सेंटर और सुशांत स्कूल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर के सौ छात्रों ने मूर्ति निर्माण कला की बारीकियां सीखी। मूर्तियों और उनको बनाने की तकनिकी जानकारी लेने आए बच्चों ने मूर्ति निर्माण को बड़े चाव से सीखा और समझा।

इस मौके पर केंद्र के निदेशक नरेश कुमार ने कहा कि कार्यशाला में उन्हें बताया गया की लकड़ी और स्टेरोफोन के अलावा क्ले भी मॉडल बनाने का एक माध्यम हो सकता है।

केंद्र में आधुनिक तकनीकी और परम्परागत कला के माध्यम से धातु, पीओपी, पत्थर, और थर्माकोल आदि की मूर्तियां बनाई जाती हैं।

थ्रीडी, जेब्रा ब्रश और अन्य आधुनिक सॉफ्टवेयर के माध्यम से मूर्तियों का प्रारूप बनाकर, पर्यावरण अनुकूल परीक्षण करने के उपरांत इन मूर्तियों को बनाने की प्रक्रिया आगे बढ़ती है।

मूर्ति बनाने की कला सीखते छात्र।

Publication	Pioneer
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No.	04
Date	18th September 2016

पायनियर

मूर्ति बनाने की कला से रूबरू हुए छात्र

गुरुग्राम। मातू राम आर्ट्स सेंटर, मानेसर में शनिवार को सुशांत स्कूल ऑफ ऑर्ट एंड आर्किटेक्चर के छात्रों ने मूर्तियों बनाने की तकनीकी जानकारी ली। इस मौके पर सेंटर के निदेशक नरेश कुमार ने कहा कि यहां आकर छात्रों ने मूर्ति कला की विभिन्न पहलुओं को जाना, उन्होंने इसकी तकनीक को समझा। इस कार्यशाला में उन्हें बताया गया कि लकड़ी और स्टेरोफोन के अलावा क्ले भी मॉडल बनाने का एक माध्यम हो सकता है। इस सेंटर में धातु, पीओपी, पत्थर, थर्माकोल इत्यादि की जीवंत मूर्तियां बनाई जाती हैं। आधुनिक तकनीकी और परम्परागत कला के माध्यम से मूर्तियां जीवंत हो उठती हैं।

Publication	Human India
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No.	03
Date	18th September 2016

ह्यूमन इंडिया

मूर्ति बनाने की आधुनिक कला से रूबरू हुए छात्र

ह्यूमन इंडिया/ब्यूरो

गुड़गांव। 90 छात्र कौतुहलवस सभी मूर्तियों और कलाकृतियों को देख रहे हैं और आश्चर्य से एक दुसरे को देखते हुए सभी विद्यार्थी मूर्तियों के सुन्दरता और बनावट की तारीफ करते जा रहे है। ये नज़ारा था मातू राम आर्टस सेंटर, मानेसर का, सुशांत स्कूल ऑफ़ आर्ट एंड आर्किटेक्चर के बच्चे यहाँ मूर्तियों और उनको बनाने की तकनिकी जानकारी लेने हेतु आये थे यह संस्थान अंसल यूनिवर्सिटी का एक हिस्सा है। इस मौके पर सेण्टर के निदेशक नरेश कुमार ने कहा कि यहां आकर इन बच्चों ने मूर्ति कला की विभिन्न पहलुओं को जाना, उन्होंने इसकी तकनिकी को समझा। इस कार्यशाला में उन्हें बताया गया कि लकड़ी और स्टेरोफोन के अलावां क्ले भी मॉडल बनाने का एक माध्यम हो सकता है।

इस सेंटर में धातु, पीओपी, पत्थर, थर्माकोल इत्यादि की जीवंत मूर्तियाँ बनायीं जाती है तथा कई विभिन्न जगहों पर कई सौ फिट की मूर्तियाँ भी यहाँ के कलाकार बनाते हैं। आधुनिक तकनिकी और परम्परागत कला के माध्यम से यहाँ की मूर्तियाँ जीवंत हो उठती हैं। थ्रीडी, जेब्रा ब्रश और अन्य आधुनिक सॉफ्टवेयर के माध्यम से मूर्तियों का प्रारूप बनाकर, पर्यावरण अनुकूल परिक्षण करने के उपरांत इन मूर्तियों को बनाने की प्रक्रिया आगे बढ़ती है। कला के क्षेत्र में मूर्तिकला कला का अपना एक अलग स्थान हैं, पूरे भावभंगिमा के साथ जब कोई मूर्ति बन के देखने के लिए राखी जाती है तब उसके पीछे की मेनहत का पता चलता है। सुशांत स्कूल ऑफ़ आर्ट्स एंड आर्किटेक्चर के छात्रा काव्या ने उत्साहित होते हुए बताया कि मैंने सोच लिया है कि अपने सेमेस्टर के उपरांत यहाँ इंटर्नशिप करने आऊंगी। मुझे मूर्तियों में बहुत रूचि है। आज मैंने सही तकनिकी और कला के माध्यम से इतनी जीवंत मूर्तियां पहली बार देखी और यह जाना कि ये कैसे बनती हैं। मैं यहाँ आकर बहुत खुश हूं।

PR PROFESSIONALS
Race for Excellence

Publication	Amar Bharti
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No.	07
Date	18th September 2016

अमर भारती
एक उम्मीद

मूर्ति बनाने की आधुनिक कला से रूबरू हुए छात्र

गुरुग्राम। 90 छात्र कौतुहलवस सभी मूर्तियों और कलाकृतियों को देख रहे हैं और आश्चर्य से एक दुसरे को देखते हुए सभी विद्यार्थी मूर्तियों के सुन्दरता और बनावट की तारीफकरते जा रहे है। ये नज़ारा था मातू राम आर्टस सेंटर, मानेसर का , सुशांत स्कूल ऑफ़ आर्ट एंड आर्किटेक्चर के बच्चे यहाँ मूर्तियों और उनको बनाने की तकनिकी जानकारी लेने हेतु आये थे। यह संस्थान अंसल यूनिवर्सिटी का एक हिस्सा है। इस मौके पर सेण्टर के निदेशक नरेश कुमार ने कहा कि यहाँ आकर इन बच्चों ने मूर्ति कला की विभिन्न पहलुओं को जाना, उन्होंने इसकी तकनिकी को समझा इस कार्यशाला में उन्हें बताया गया की लकड़ी और स्टेरोफोन के अलावां क्ले भी मॉडल बनाने का एक माध्यम हो सकता है । इस सेंटर में धातु, पीओपी, पत्थर , थमाकजेल इत्यादि की जीवंत मूर्तियाँ बनायीं जाती है तथा कई विभिन्न जगहों पर कई सौ फिट की मूर्तियाँ भी यहाँ के कलाकार बनाते हैं।

आधुनिक तकनिकी और परम्परागत कला के माध्यम से यहाँ की मूर्तियाँ जीवंत हो उठती हैं। थ्री डी , जेब्रा ब्रश और अन्य आधुनिक सॉफ्टवेयर के माध्यम से मूर्तियों का प्रारूप बनाकर, पर्यावरण अनुकूल परिक्षण करने के उपरांत इन मूतिर्यों को बनाने की प्रक्रिया आगे बढ़ती है। कला के क्षेत्र में मूर्तिकला कला का अपना एक अलग स्थान हैं , पुरे भावभंगिमा के साथ जब कोई मूर्ति बन के देखने के लिए राखी जाती है तब उसके पीछे की मेनहत का पता चलता है। सुशांत स्कूल ऑफ़ आर्ट्स एंड आर्किटेक्चर के छात्रा काव्या ने उत्साहित होते हुए बताया की - मैंने सोच लिया है कि अपने सेमेस्टर के उपरांत यहाँ इंटर्नशिप करने आऊंगी 7 मुझे मूर्तियों में बहुत रूचि है , आज मैंने सही तकनिकी और कला के माध्यम से इतनी जीवंत मुर्तियां पहली बार देखी और यह जाना की ये कैसे बनती हैं। मैं यहाँ आकर बहुत खुश हूँ।

मातू राम आर्टस सेंटर के बारे में : मातू राम आर्टस सेंटर सबसे प्रतिष्ठित और सबसे पुराना मुर्तिनिर्माण और भारत में विशाल प्रतिमा निर्माण कंपनी में से एक है । विश्वभर में बहुत सारी प्रतिष्ठित मूर्तियों को डिजाईन और विकसित किये हैं। यहाँ के कलाकार विशाल मूर्तियां विकसित करने के लिए आधुनिक तकनीक का सरलता से उपयोग करते हैं। मातू राम वर्मा, सेण्टर का उद्देश्य पूरी दुनिया में सुन्दर मूतिर्यों का निमार्ण करना है।

नरेश कुमार कुमावत तीसरी पीढ़ी के कलाकार हैं, जिन्होंने अपने पूर्वजों से प्राप्त कला में तकनीक का समिश्रण कर इस संस्थान को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं।